पृष्ठ : 04
स्थापित : 2008
संस्थापक: स्व. बी. शंकर
20 जून 2025, शुक्रवार
संपादक: गंगा असनोड़ा: 9412079290

सरोकारों से साक्षात्कार

रीजनल रिपोर्टर

श्रीनगर (गढ़वाल), उत्तराखण्ड से प्रकाशित, साप्ताहिक आर.एन.आई.नं: UTTHIN/2008/24749, वर्ष: 16, अंक: 49, मूल्य: 10

देश सेवा के लिए 451 कैडेट्स ने भरा अंतिम पग

रीजनल रिपोर्टर ब्यूरो

14 जून को आईएमए देहरादून में हुई पासिंग आउट परेड में भारत तथा अन्य नौ मित्र देशों के कुल 451 जांबाज सैनिकों ने अंतिम पग भरकर कसम परेड में हिस्सा लिया।

इस पासिंग आउट परेड में भारतीय सेना को कुल 419 जांबाज अफसर मिल गए हैं, जबकि 9 मित्र देशों के 32 युवा कैडेट्स भी इस पासिंग आउट परेड का हिस्सा बने, जो अपने-अपने देशों की सेनाओं में कमान संभालेंगे। परेड में कैडेट्स ने अपना तन, मन और जीवन देश को समर्पित करने की शपथ ली।

इस मौके पर मुख्य अतिथि निरीक्षण अधिकारी श्रीलंका के सेना प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल बीकेजीएम लासंथा रोड्रिगो ने परेड की सलामी ली। परेड में शामिल कैडेट्स को बेहतरीन प्रदर्शन तथा बेदाग उपस्थिति के लिए बधाई दी। ***शेष पृष्ट सं. 02***

एनी नेहरा को मिला स्वॉर्ड ऑफ ऑनर

आईएमए की पासिंग आउट परेड में प्रशिक्षण के दौरान सभी क्षेत्रों में उनके कौशल को देखते हुए निरीक्षण अधिकारी श्रीलंका सेना के कमांडर लेफिटनेंट जनरल बीकेजीएम लासांथा रोड्रिगो ने पदक प्रदान किए। 'स्वॉर्ड ऑफ ऑनर' तथा श्रेष्ठता सूची में 'रजत पदक' दोनों एनी नेहरा को दिए गए।

इसके साथ ही श्रेष्ठता सूची में स्वर्ण पदक अकादमी के अवर अधिकारी रोनित रंजन नायक को तथा कांस्य पदक अनुराग वर्मा को दिया गया। इसके साथ ही तकनीकी प्रवेश योजना (टीईएस) कपिल को रजत पदक तथा तकनीकी स्नातक पाठ्यक्रम में सार्जेंट आकाश भदौरिया को रजत पदक तथा विदेश से प्रशिक्षण ले रहे प्रशिक्षणार्थियों में श्रेष्ठ कैडेट का पदक निशान बालामी को, जबकि स्प्रिंग टर्म 2025 के लिए 12 कंपनियों में से श्रेष्ठ कंपनी केरेन कंपनी को चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ बैनर प्रदान किया गया।

गैरसैण के प्रणव काला ने सेना में शामिल होकर किया पारिवारिक परंपरा का निर्वाह

गैरसैण के प्रणव काला ने आईएमए की कसम परेड के साथ अपने परिवार की पारंपरिक विरासत को और अधिक मजबूत कर दिखाया है। मूल रूप से गैरसैण तहसील के छपाली परमघाट, घंडियाल निवासी तथा हाल में गैरसैण निवासी प्रणव के परदादा खिमानंद काला ब्रिटिश सेना में बतौर सैनिक शामिल रहे, जबकि दादा पंडित शालकीराम काला भारतीय सेना इलेक्ट्रिकल मैकेनिकल कोर का हिस्सा रहकर हवलदार पद से सेवानिवृत्त हुए। प्रणव के पिता दिनेश प्रसाद काला गढ़वाल रेजीमेंट की 11वीं बटालियन से सूबेदार मेजर पद से सेवानिवृत्त हुए, जबकि आईएमए परेड का हिस्सा बनकर स्वयं प्रणव अब भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट पद पर तैनात हो गए हैं। इस तरह उन्होंने अपने परिवार की पारंपरिक विरासत को न सिर्फ सहेजा है, बल्कि उसके प्रभाव में ईजाफा भी किया है। प्रणव की इस उपलब्धि को गैरसैण क्षेत्र के लोगों ने भी गौरव का पल बताया है।

मां ममता काला ग्रहणी हैं। उनके माता-पिता ने बताया कि प्रणव ने कक्षा चार तक की पढ़ाई एसजीआरआर गैरसैण में की। पांचवीं से उनकी पढ़ाई आर्मी पब्लिक स्कूल, बीकानेर, जबकि इंटरमीडिएट की पढ़ाई सेंट थेरेसास, काठगोदाम में हुई।परिवार के संस्कारों तथा सैनिक स्कूल के प्रबंधन ने उसे सेना में ही करियर बनाने के लिए आकर्षित किया। दिल्ली विवि से गणित स्नातक कर उन्होंने सीडीएस के माध्यम से आईएमए में प्रवेश किया। उनकी बहन सृष्टि काला डिजिटल मार्केटिंग में वरिष्ठ प्रबंधक के पद पर कार्यरत हैं। ■■■

कोरोनाकाल में मिला सपना, आईएमए की पीओपी में हुआ पूरा

भारती जोशी

कोरोनाकाल में जब पूरा देश कमरों में कैद सोशल मीडिया पर आ रही रीलों की निगहबानी में व्यस्त था, तभी मुंबई निवासी 11वीं कक्षा के विद्यार्थी हर्षित जोशी ने भारतीय सेना के पूर्व सेनाध्यक्ष सैम बहादुर के नाम से विख्यात मानेकशॉ की वीरता से जुड़ी रील्स देखी।

धीर-गंभीर प्रकृति के होनहार छात्र हर्षित ने मानेकशॉ से प्रभावित होकर उनको ही अपना आदर्श बना लिया और तय किया कि उन्हें भारतीय सेना का हिस्सा बनना है। इसके लिए वे तैयारी में जुट गए और एनडीए उत्तीर्ण कर अपनी अकाट्य प्रतिज्ञा को पूरा कर दिखाया। बीते 14 जून को देहरादून के आईएमए से पास आउट हुए 451 कैडेट्स में अल्मोड़ा के ताड़ीखेत का यह लाल भी शामिल रहा।

आईएमए तक पहुंचने के सफर में सबसे शानदार बात यह रही कि जिन सर मानेकशॉ से प्रभावित होकर हर्षित ने भारतीय सेना में जाने का ख्वाब देखा, उन्हीं सर मानेकशॉ के नाम पर आईएमए में स्थापित बटालियन में शामिल होकर ही हर्षित जोशी ने अंतिम पग भरा।

हर्षित की माता विद्या जोशी तथा पिता मनोज जोशी ने बताया कि हर्षित बचपन से ही एक प्रतिभाशाली छात्र रहे हैं। उनके लिए आईएमए की पासिंग आउट परेड में अपने बेटे को देखना बेहद गौरव का पल है। इस मौके पर हर्षित की दादी कमला जोशी, नानी हेमा मठपाल, मामा मनीष मठपाल एवं मामी सोनम मठपाल भी इस पल के गवाह बने। ■■■

प्रो. श्रीप्रकाश होंगे गढ़वाल विवि के नए कुलपति

लंबे समय की प्रतीक्षा के बाद गढ़वाल विश्वविद्यालय में स्थायी कुलपति की नियुक्ति विजिटर (राष्ट्रपति) द्वारा कर दी गई है।

गढ़वाल विवि के नए कुलपति प्रो. श्रीप्रकाश सिंह इससे पूर्व दिल्ली विश्वविद्यालय के साउथ कैंपस के निदेशक के रूप में कार्यरत थे। दिल्ली विश्वविद्यालय से अपना अकादमिक सफर शुरू कर उन्होंने राजनीति विज्ञान में एम.ए. (1987), एम.फिल. (1989) और पी.एच.डी.(2001) की उपाधियाँ प्राप्त कीं और 2015 से दिल्ली विवि के राजनीति विज्ञान विभाग में प्रोफेसर पद पर कार्यरत रहे।

पूर्व में उन्होंने भारतीय लोक प्रशासन संस्थान में डॉ.अम्बेडकर चेयर इन सोशल जस्टिस की जिम्मेदारी संभाली। उन्होंने यूजीसी नियमावली, नेट पाठ्यक्रम, और राजनीति विज्ञान व लोक प्रशासन के पाठ्यक्रम विकास जैसी प्रमुख परियोजनाओं में भाग लिया है। ■■■

अमेरिका के साउथिंगटन हाई स्कूल की छात्रा कृति गुप्ता ने दूसरा स्थान पाकर दिया रोचक भाषण

गंगा असनोड़ा

नॉर्थ अमेरिका का साउथिंगटन हाई स्कूल, जिसमें साउथिंगटन, प्लेनविले, मिलडेल तथा मार्लिन शहरों के विद्यार्थी पढ़ते हैं। इस विद्यालय के हाईस्कूल परीक्षा में इस वर्ष भारतीय मूल की कृति गुप्ता श्रेष्ठता सूची में 'दूसरे' स्थान पर रहीं। अमेरिका में प्रथम स्थान पाने वाले को वेलिडेटरियन तथा दूसरे स्थान पाने वाले को सेलिटेटरियन कहते हैं। भावी समय में मनोचिकित्सक बनने की चाह रखने वाली 18 वर्षीय कृति गुप्ता के इस शानदार भाषण को पढ़िए तो...

अपने शिक्षकों का धन्यवाद करते हुए, विशेष रूप से अपने कक्षाध्यापक हेनमन का आभार जताते हुए उन्होंने कहा कि तमाम नादानियों तथा खुराफातों के बावजूद वे अपने विद्यार्थियों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते रहे।

इस दुनिया में बहुत दुख हैं, लेकिन बहुत सुंदरता भी है। मुझे यह मालूम है, क्योंकि मैं इसे हमारे भीतर देखती हूं।

हर कोई आपको बताएगा कि दुनिया को बदलने के लिए हमें कुछ बड़ा और भव्य चाहिए, लेकिन ऐसा नहीं है।

दुनिया शायद कभी उस तरह से नहीं बदलेगी जैसा हम चाहते हैं। कम से कम हमारे जीवन काल में तो नहीं। अभी दुनिया में बहुत अधिक उत्पीड़न और घृणा है, जिनमें से अधिकांश हमारे सीधे नियंत्रण से बाहर है। इसका मतलब यह नहीं कि हम शक्तिहीन हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि हम बदलाव नहीं ला सकते। दुख है, लेकिन उम्मीद भी है। जैसे ही हम अपने सामने की दुनिया में कदम रखते हैं, छोटी-छोटी चीज करें। भले ही यह सुनने में कितना भी घिसा-पिटा लगे। उस बूढ़ी महिला को सड़क पार करने में मदद करें। दुनिया के छोटे-छोटे हिस्सों को ठीक करके दुनिया को बदलने वाला व्यक्ति बनें। हम हर समस्या को ठीक नहीं कर सकते, स्थिति को नियंत्रित नहीं कर सकते, लेकिन हम जो नहीं कर सकते, उस पर ध्यान ना दें। हम जो कर सकते हैं, उस पर ध्यान दें। हम रोने के लिए कंधा दे सकते हैं, अपने साथियों का समर्थन कर सकते हैं और बचा हुआ कचरा उठा सकते हैं, भले ही वह हमारा ना हो। हम आश्रम स्थलों में स्वयं सेवा कर सकते हैं, भेदभाव के खिलाफ खड़े हो सकते हैं और अन्याय के खिलाफ प्रदर्शन कर सकते हैं। हम सार्थक कार्यवाही कर सकते हैं और ऐसा करके हम जीवन बदल सकते हैं। जब मैं भीड़ में देखती हूं, तो मैं सिर्फ उन लोगों को नहीं देखती, जिन्हें मैं पिछले 4 साल से जानती हूं। मैं अपना भविष्य देखती हूं। मैं भविष्य के डॉक्टरों, वकीलों, शिक्षकों, इंजीनियरों, अंतरिक्ष यात्रियों तथा भविष्य के मेहनतकश लोगों को देखती हूं। हमारी क्षमता असीमित है, लेकिन यह केवल उतना ही आगे बढ़ेगी, जितना हम इसे ले जाएंगे। इसलिए हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम इसे अभी बहुत दूर तक ले जाएं। हम सभी अपने जीवन के इस महत्वपूर्ण, लेकिन क्षणभंगुर क्षण को साझा कर रहे हैं, लेकिन जैसे-जैसे हम आगे बढ़ रहे हैं, मुझे आशा है कि हम सभी एक समय में एक छोटी से छोटी चीज के साथ बड़े-बड़े काम करेंगे। ■■■

हर कोई आपको बताएगा कि दुनिया को बदलने के लिए हमें कुछ बड़ा और भव्य चाहिए, लेकिन ऐसा नहीं है।

SUBSCRIBE

संपादकीय

योग के लिए जरूरी है पृथ्वी का वजूद

आगामी 21 जून को पूरे विश्व में योग दिवस का आयोजन होगा। इस वर्ष योग दिवस को विशेष रूप से 'एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य' थीम दी गई है। बीते वर्ष यह थीम थी- 'स्वयं और समाज के लिए योग।'

नि:संदेह योग स्वास्थ्य के निरोगी रहने के लिए एक शानदार विकल्प है। आज की भागमभाग भरी जिंदगी में योग, निरोगी काया के साथ प्रत्येक व्यक्ति को अपनी-अपनी भूमिका निभाते हुए पृथ्वी के अस्तित्व को बचाने के लिए कुछ न कुछ करने की प्रेरणा देता है। विशेष रूप से सतत प्रयास का संदेश।

यह सतत प्रयास अपने शरीर के लिए जितना जरूरी है, उतना ही कई अन्य क्षेत्रों में भी। आज पूरे विश्व में जो भी गतिविधियां दिख रही हैं, उन्हें हम विकास के रूप में देख रहे हैं। जितनी चकाचौंध, उतना बड़ा विकास। जितनी ऊंची परियोजनाएं, उतना ऊंचा विकास। जितने पेड़ों का कटान, उतना विशाल विकास।

ये विकास करते हुए हम योग की सततता की अवधारणा को भूल जाते हैं। हम भूल जाते हैं कि योग करने का मूल मंत्र श्वांस लेना है। श्वांस लेने के लिए हमें पेड़ों पर ही आश्रित रहना होता है। फिर बिना पेड़ों के हो रहे विशाल विकास को लेकर न हम रह सकते हैं, न हमारा समाज और ना ही हमारी पृथ्वी।

कक्षा पांचवीं की छात्रा रहते हुए भूगोल के पहले अध्याय में 'हमारी पृथ्वी' को पढ़ा था। तब से अब तक पृथ्वी के अस्तित्व के लिए पेड़ों की महत्ता मन-मस्तिष्क में जो बनी हुई है, वो संभवत: जीते-जी कभी नहीं उतर सकती। अब तो हमारी पृथ्वी नाम से पुस्तकें कई कक्षाओं में लगी हुई हैं। प्रतिवर्ष योग दिवस भी मनाया जा रहा है। कई-कई संगठन और स्वयं प्रधानमंत्री योग के प्रचार-प्रसार में जुटे हुए हैं।

वैश्विक स्तर पर इन्हें थीम दी जा रही है। इसी थीम के आधार पर सरकारी और गैर-सरकारी संगठन नारे तैयार कर रहे हैं। रैलियां निकल रही हैं। शहर दर शहर योगाभ्यास कराया जा रहा है। सोशल मीडिया के दौर में सोशल मीडिया पर योग करते हुए फोटो और वीडियो चस्पा किए जा रहे हैं...और भी बहुत कुछ, लेकिन क्या थीम विशेष से पृथ्वी और जीवन को बचाया जा सकता है? क्या इसके लिए जागरूक होकर प्रत्येक व्यक्ति को प्रयास करने की जरूरत नहीं होगी?

प्रतिवर्ष अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने के बावजूद हमारी सरकारें योग के प्रति कितनी सचेत हैं? योग प्रशिक्षितों को सालों साल योग विषय अनिवार्य किए जाने की घोषणा करने के बाद भी योग को अनिवार्य विषय क्यों नहीं कर दिया गया? योग वास्तव में रोगमुक्त रहने का सबसे विलक्षण उपाय है, इसे समझने की जरूरत है, सोशल मीडिया पर अपनी फोटो चिपकाने भर से योग का लाभ नहीं मिल सकता, इसे समझने की जरूरत है। ■■■

क्षणभंगुर संसार की अहमदाबाद में हुई यह दारुण घटना

उमा घिल्ड़ियाल

एआई 171 का विमान अपने निर्धारित स्थान पर खड़ा है। यात्री आ रहे हैं। एयर होस्टेस स्वागत कर रही हैं। उन्हें नहीं मालूम कि उनकी ओर से हो रहा यह स्वागत अन्तिम स्वागत है। यात्री अभिवादन स्वीकार करते हुये आगे बढ़ रहे हैं, बिना यह जाने कि यह अभिवादन अन्तिम है। यात्री बैठ चुके हैं। हर प्रकार की तैयारियाँ चल रहीं हैं। होस्टेस पेटी बाँधने के लिये कह रही हैं। स्वयं जाँच भी रही हैं। कुछ लोग बैठ कर मोबाइल देख रहे हैं, तो कुछ सामान रख रहे हैं। कुछ फोन कर रहे हैं। उन्हें पता नहीं है कि थोड़ी देर बाद वे फोन नहीं कर पायेंगे।

हवाई जहाज के भीतर एक छोटा विश्व बना हुआ है। कनाडा , लन्दन , पुर्तगाल और भारत के यात्री बैठे हुये हैं। एयर होस्टेस आयी और आपातकालीन व्यवस्थाओं को बताने लगती है। थोड़ी देर बाद पायलट की गुरू गम्भीर वाणी गूँजती है, अपना परिचय, अपने साथियों का परिचय देते हुये वे सबका स्वागत करते हैं, निर्दिष्ट स्थान बताते हैं। कोई नहीं जानता कि यह सब फिर नहीं होगा। यात्रियों की बातचीत, हँसी, चुप्पी सब महसूस की जा सकती है।

समय हो गया है... कहाँ का... नहीं ज्ञात। प्लेन का इंजन घरघराने लगा है। कुछ देर बाद रनवे पर दौड़ रहा है। होस्टेस मोबाइल, लैपटॉप बन्द करने के लिये कह रही हैं। प्लेन ने गति पकड़ी और ठीक समय पर टेक ऑफ कर गया।

कुछ ही पलों बाद पायलट को अनहोनी की आशंका हुई। सब कुछ कन्ट्रोल से बाहर, मदद का सन्देश भेजा, परन्तु दुर्भाग्य... समय का क्रूरतम प्रहार, प्लेन तेजी से नीचे गिरने लगा, मेडिकल कॉलेज की ऊँची बिल्डिंग से टकराया , अग्नि धधक उठी। भयंकर विस्फोट के साथ विमान का जलता मलवा मेडिकल कॉलेज की छत पर और अभागे यात्रियों के साथ ही साथ चिकित्सक तथा मेडिकल छात्र भी काल-कवलित हो गए। सब कुछ समाप्त।

बनने में वर्षों लग जाते हैं, समाप्त होने में कुछ पल भी नहीं। इसी लिये संसार को क्षणभंगुर कहा जाता है।

सभी दिवंगतों को श्रद्धांजलि! ■■

प्रश्नों के बीज

महेश चन्द्र पुनेठा

जब प्रश्नों के बीज अंकुरित होंगे,
तो एक न एक दिन
उत्तरों के फल लगेंगे ही लगेंगे
कोई नहीं रोक सकता है उन्हें।

जैसे होते हैं बीज
वैसे ही लगते हैं फल
हर बीज में छुपा होता है फल।

बीजों के अंकुरण के लिए
तैयार करनी होती है जमीन,
चाहिए होती है
उचित हवा,नमी और धूप
खुला आकाश
ध्यान रखना होता है,
कि सख्त खुरों तले
रौंदा न जाए कोई बीज।

पेड़ से गिरते हुए सेव को
न्यूटन से भी पहले देखा होगा
बहुत सारे लोगों ने
पर प्रश्न ही था जिसने
न्यूटन को पहुंचाया गुरुत्वाकर्षण के नियम तक।

एआई के युग में
हो गया है उत्तर खोजना बहुत आसान
बशर्ते कि प्रश्न पूछना आता हो
क्या पूछें, कैसे पूछें,
यह कला ही पहुंचाती है उत्तरों तक। ■■■

पृष्ठ 01 का शेष

देश सेवा के लिए ...

देते हुए कहा कि यह यात्रा मजबूत और गहरे ऐतिहासिक सैन्य संबंधों को दर्शाती है, जो दोनों सेनाओं के बीच संबंधों को और मजबूत करेगी।

उल्लेखनीय है कि श्रीलंका के सेना प्रमुख स्वयं 1990 में भारतीय सैन्य अकादमी के 87वें कोर्स से कमीशन प्राप्त कर चुके हैं। ■■■

केदारनाथ मार्ग पर श्रद्धालुओं के लिए चाहिए कम से कम दो पैदल मार्ग

वीरेन्द्र कुमार पैन्यूली

खराब मौसम, भूस्खलन और दुर्घटनाओं की वजह से केदारनाथ पैदल मार्ग को बार-बार रोकना पड़ रहा है। अभी 15 जून को ही जंगलचट्टी के पास मार्ग पर भारी पत्थर गिरने से पैदल यात्रा रोक दी गई। इस बार 2 मई को यात्रा के पहले ही दिन हजारों श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी थी। बार-बार यह जरूरत महसूस हो रही है कि भीड़भाड़ व दुर्घटनाओं से बचने के लिए केदारनाथ पुरी को वैकल्पिक मार्गों से जोड़ने की जरूरत है।

लोग अभी भूले नहीं हैं। 31 जुलाई 2024 की रात केदारनाथ पैदल मार्ग में बादल फटने से जंगलचट्टी, भीमबली, लिंचोली तथा रामबाड़ा के क्षेत्र में भारी नुकसान हुआ। भीमबली पुलिस चौकी के पास इसका लगभग 30 मीटर हिस्सा ढह गया था। दो पुल भी बह गए। जंगलचट्टी में 60 मीटर व गौरीकुंड में घोड़ा पड़ाव के पास 15 मीटर सड़क बिल्कुल खत्म हो गई। लगभग 15,000 यात्री जहां-तहां फंस गए। उन्हें सुरक्षित जगहों पर पहुंचाने में पूरे पंद्रह दिन लग गए। पैदल मार्ग लगभग 29 जगह क्षतिग्रस्त हुआ। इसके बाद तो पूरे यात्राकाल में पैदल मार्ग खुलता और बंद होता रहा। इस साल जून में ही मार्ग पर भारी पत्थर गिरने से पैदल यात्रा रोकनी पड़ी। मानसून से पहले भी पूरे देश में तेज बरसात होने लगी है। उत्तराखंड भी इसका अपवाद नहीं है। पूरी आशंका है कि भूस्खलन व मार्ग पर मलबा गिरना जारी रहेगा। इसलिए वैकल्पिक पैदल मार्गों की रणनीति अपनाने का समय आ गया है।

15 जून को इसी क्षेत्र में हेलीकॉप्टर दुर्घटना भी हुई, जिसमें कुल सात लोगों ने जान गंवाई है। वैसे भी बरसात में हेलीकॉप्टर सेवा बाधित होती है। ऐसे में, वैकल्पिक पैदल मार्गों को चुस्त-दुरस्त रखना आवश्यक हो गया है। बीते वर्ष मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मार्ग की क्षतियों के आंकलन व उस पर रिपोर्ट देने की जिम्मेदारी नेहरू पर्वतारोहण संस्थान, उत्तरकाशी के पूर्व प्रधानाचार्य (सेवानिवृत्त) कर्नल अजय कोठियाल को दी थी। आकलन में यह भी पता चला है कि गिरते झरनों से होने वाले कटाव से भी पैदल मार्ग की चौड़ाई जगह-जगह कम हुई है। अब साल 2013 में ध्वस्त हुए व बंद किए गए पैदल मार्ग को चालू कर वहां से भी यात्रा चलाई जाएगी। वर्तमान पैदल मार्ग को भी पूरी तरह से ठीक किया जाएगा। 16-17 जून 2013 की आपदा में पारंपरिक 14 किलोमीटर का गौरीकुंड केदारनाथ पैदल मार्ग बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। रामबाड़ा का तो नामो-निशान ही नहीं बचा। वन विभाग से मिली भूमि उपयोग की अनुमति के बाद 2013 में क्षतिग्रस्त हुए मार्ग को ठीक करने की राह खुली।

कर्नल कोठियाल के ही नेतृत्व में उनके 12 सदस्यीय दल ने जून 2013 की केदारनाथ आपदा के बाद मंदाकिनी घाटी में ट्रैकिंग कर तीन वैकल्पिक मार्ग बताए थे। एक माह के भीतर ही उत्तराखंड सरकार को चौमासी-खाम-रेका केदारनाथ मार्ग सुझाया था। इसमें दूरी 34 किलोमीटर है और चलने में तीन दिन लगते हैं। वैकल्पिक मार्गों को अगर दुरुस्त कर दिया जाए, तब मंदाकिनी के दोनों छोरों से चलने पर केदारपुरी पहुंचने के लिए दो वैकल्पिक मार्ग उपलब्ध हो जाएंगे। जुलाई 2024 की आपदा के बाद केवल एक ही खुलते और बंद होते मार्ग की वजह से श्रद्धालुओं की भीड़ को नियंत्रित रखना मुश्किल हो जा रहा है। पहाड़ों में अपनी मंजिल तक पहुंचने के लिए अधिक मार्ग तो होने ही चाहिए, क्योंकि समय के साथ श्रद्धालुओं की संख्या भी बढ़ती ही जाएगी।

बीते सीजन में लगभग 16 लाख लोग पैदल मार्ग से केदारनाथ पहुंचे थे। इस संख्या में अगर स्थानीय लोगों, घोड़े-खच्चर, पालकी लाने-ले जाने वालों की संख्या के साथ पूरे मार्ग पर आने-जाने वाले लोगों को जोड़ लें, तो सोचकर ही मुश्किल का एहसास होता है। इतनी भारी संख्या में लोग एक ही पैदल मार्ग से यात्रा करेंगे, तो हादसों की आशंका रहेगी।

पहाड़ों को बेतहाशा भीड़ के लिए तैयार रहना होगा, इसके लिए दो से ज्यादा पैदल मार्गों को दुरुस्त रखना होगा। वैकल्पिक मार्गों पर संचार सुविधा भी पुख्ता रखने की जरूरत है। पहाड़ों में मोबाइल फोन संपर्क टूटने पर परिजन बहुत चिंतित हो जाते हैं और राहत कार्यों में भी खूब परेशानी आती है। अफवाहों को भी बल मिलता है। मतलब, पहाड़ों में पैदल यात्रा और संचार का क्रम सुनिश्चित रहना चाहिए। ■■■

आपकी प्रतिक्रिया का हमें इंतजार है।
अपनी प्रतिक्रिया इस पते पर भेजें।

9412079290, 7037548484

regionalreporter81@gmail.com

श्री कम्यूनिकेशन के लिए गंगा असनोड़ा थपलियाल द्वारा 15 फालतू लाईन, समय साक्ष्य देहरादून से मुद्रित एवं 76, अपर बाजार श्रीनगर से प्रकाशित।
न्यायिक क्षेत्र : श्रीनगर गढ़वाल
संस्थापक संपादक : स्व. बी. शंकर
सलाहकार: वीरेन्द्र कुमार पैन्यूली
संपादक : गंगा असनोड़ा थपलियाल
विशेष प्रतिनिधि : उमा घिल्डियाल
स्टेट ब्यूरो : भारती जोशी
विशेष प्रतिनिधि (गैरसैण):
भैरव दत्त असनोड़ा

कार्यालय : श्री कम्यूनिकोशन 76, अपर बाजार, श्रीनगर गढ़वाल-246174
आर.एन.आई.न.-
UPHIN/1999/863

केदारनाथ धाम में मलबे की चपेट में आने से दो की मौत

रीजनल रिपोर्टर ब्यूरो

केदारनाथ मंदिर जाने वाले पैदल यात्रा मार्ग पर अचानक पहाड़ से गिरे मलबे की चपेट में आकर 2 श्रद्धालुओं की मौत हो गई है, जबकि 3 अन्य गंभीर रूप से घायल हुए हैं।

यह हादसा जंगल चट्टी इलाके में पोल नंबर 153 के पास हुआ है, जहां 15 जून को भी मलबा गिरने के कारण यात्रा को अस्थायी रूप से रोक दिया गया था। केदारनाथ धाम यात्रा में इससे पहले इसी सीजन में दो बार हेलीकॉप्टर क्रैश हो चुके हैं, जिनमें से एक हादसे में 5 लोगों की मौत हो गई थी।

सेक्टर मजिस्ट्रेट से मिली जानकारी के अनुसार, गौरीकुंड से केदारनाथ धाम पैदल यात्रा मार्ग पर श्रद्धालुओं की सामान्य आवाजाही थी। बुधवार दोपहर 12 बजे के करीब जंगल चट्टी के पोल नंबर 153 के पास पहाड़ी से अचानक पत्थर गिरने लगे। पत्थरों से बचने की कोशिश में 5 श्रद्धालु खाई में जा गिरे। इससे दो लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि तीन लोग घायल हो गए।

सूचना मिलते ही उत्तराखंड पुलिस और एसडीआरएफ की टीम मौके पर पहुंच गई। एसडीआरएफ टीम ने खाई में गिरे श्रद्धालुओं को रेस्क्यू किया। इसके बाद दोनों मृतकों के शव और एक घायल व्यक्ति को कंडी के जरिये गौरीकुंड भेजा गया है। दो अन्य घायलों को भी प्राथमिक चिकित्सा दी गई।

केदारनाथ धाम ट्रैक पर लगातार बारिश के कारण लैंडस्लाइड का खतरा बेहद ज्यादा बढ़ जाता है। साथ ही ट्रैक के फिसलन भरा होने से भी श्रद्धालुओं के गिरने का खतरा पैदा हो जाता है. मौसम विभाग ने अगले कई दिन तक लगातार बारिश का अनुमान जारी किया है। ■■■

त्रिस्तरीय पंचायतों के आरक्षण की अंतिम सूची जारी

रीजनल रिपोर्टर ब्यूरो

पौड़ी गढ़वाल में त्रिस्तरीय पंचायतों के आरक्षण निर्धारण की प्रक्रिया पूर्ण कर अंतिम आरक्षण सूची का प्रकाशन कर दिया गया है।

पूर्व में जारी अनंतिम सूची पर प्राप्त आपत्तियों व दावों का परीक्षण कर 16 जून को विकास भवन में जिला मजिस्ट्रेट/जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ.आशीष चौहान की उपस्थिति में सुनवाई की गयी थी, जिसमें पात्र आपत्तियों का समाधान करते हुये अंतिम सूची जारी की गयी।

जिला मजिस्ट्रेट/जिला निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि पारदर्शिता सुनिश्चित करते हुये यह पूरी प्रक्रिया निर्धारित समयसीमा में पूर्ण की है। सूची के प्रकाशन के बाद ग्राम पंचायतों से लेकर जिला पंचायत स्तर तक आरक्षण की स्थिति स्पष्ट हो गयी है।

16 जून को कुल 389 आपत्तियां प्राप्त हुईं, जिसमें प्रमुख पद के सापेक्ष 12, सदस्य जिला पंचायत के सापेक्ष 34, सदस्य क्षेत्र पंचायत के सापेक्ष 118, प्रधान पद के सापेक्ष 225 आपत्तियां शामिल थी। आपत्तियों का समाधान करते हुए अंतिम सूची जारी कर दी गयी है। अंतिम सूची सभी विकासखंडों, जिला पंचायतीराज कार्यालय व जिलाधिकारी कार्यालय में चस्पा कर दी गयी है। ■■■

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू तीन दिनी उत्तराखंड दौरे पर

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू 19 जून से तीन दिवसीय दौरे पर उत्तराखंड पहुंची हैं। अपने दौरे के पहले दिन वह देहरादून में एक नए एम्फीथियेटर का उद्घाटन करेंगी। 20 जून को राष्ट्रपति आशियाना को आम जनता के लिए खोलेंगी। यह पहली बार होगा जब यह परिसर लोगों के लिए सार्वजनिक रूप से सुलभ होगा। फिर राष्ट्रीय दृष्टि दिव्यांगजन सशक्तीकरण संस्थान का भी दौरा करेंगी करेंगी उसी शाम राष्ट्रपति राजभवन, नैनीताल के 125 वर्ष पूरे होने के अवसर पर एक डाक टिकट जारी करेंगी।

21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर विशेष योग कार्यक्रम में भाग लेंगी और लोगों को स्वास्थ्य व योग के प्रति जागरूक करेंगी। ■■■

खिर्सू के झाला गांव में प्रकृति के बीच सूकुन भरा एक होमस्टे

हेमलता

अबोध बंधु बहुगुणा गढ़वाली साहित्य का जाना-पहचाना नाम रहे हैं। सरकारी नौकरी के साथ उन्होंने गढ़वाली में कविता, नाटक और एकांकी जैसे रचनात्मक कार्य किए।

उनके बेटे अरधेंदू भूषण बहुगुणा ने दिल्ली की व्यस्त जिंदगी छोड़कर अपने पुश्तैनी गाँव झाला, खिर्सू (पौड़ी गढ़वाल) में बसने का फैसला किया। अरधेंदू बहुगुणा खुद लेखक नहीं हैं, लेकिन पिताजी की एक बात 'उत्तराखंड स्वर्ग भूमि है' उनके जीवन का रास्ता तय कर गई। उन्होंने अपने खेतों में आम, देवदार, बांज जैसे पेड़ लगाए हैं और पर्यावरण-संरक्षण को लेकर गंभीर हैं। वे खेती, डॉग ब्रीडिंग और गाँव में हरियाली लौटाने में जुटे हैं।

दिल्ली में वे रॉटविलर के लिए पुरस्कार भी जीत चुके हैं, लेकिन पहाड़ में वे तिब्बतीन मस्टिफ और भोटिया नस्ल को प्राथमिकता देते हैं, जो यहाँ के मौसम और सुरक्षा दोनों के लिए बेहतर हैं।

हाल ही में उन्होंने अपने गाँव में एक छोटा होमस्टे शुरू किया है, जो उन लोगों के लिए है जो शांति, प्रकृति और सुकून की तलाश में हों। यह सिर्फ एक होटल नहीं, बल्कि गाँव में रुकने और कुछ बदलने की उनकी कोशिश है।

संस्थान के शुभारंभ के मौके पर पूर्व मंडल अध्यक्ष भाजपा संपत सिंह रावत, निजी सचिव उमेश ढोंडियाल, हेमंत सिंह नेगी, महेश सिंह आदि मौजूद रहे। ■■■

16वीं जनगणना 2027: पहली बार जाति आधारित जनगणना

केंद्र सरकार ने सोमवार को वर्ष 2027 में होने वाली देश की 16वीं जनगणना को लेकर गजट अधिसूचना जारी कर दी है। इसमें पहली बार जाति आधारित गणना को भी शामिल किया गया है। गृह मंत्री अमित शाह ने इस संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि जनगणना दो चरणों में पूरी की जाएगी और इसके लिए अत्याधुनिक डिजिटल उपकरणों का उपयोग किया जाएगा।

अधिसूचना के अनुसार बर्फबारी वाले क्षेत्रों-जैसे लद्दाख, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में जनगणना की शुरुआत 1 अक्टूबर 2026 से की जाएगी, जबकि देश के बाकी हिस्सों में यह प्रक्रिया 1 मार्च 2027 से आरंभ होगी और उसी दिन तक पूरी कर ली जाएगी। ■■■

गैरसैण में राष्ट्रीय बाल साहित्य संगोष्ठी सम्पन्न

भैरवदत्त असनोड़ा

बाल पत्रिका 'बालप्रहरी' तथा श्री भुवनेश्वरी महिला आश्रम के संयुक्त तत्वावधान में श्री भुवनेश्वरी महिला आश्रम गैरसैण में आयोजन किया गया था।

तीन दिवसीय 'राष्ट्रीय बालसाहित्य संगोठी' में 'बालसाहित्य में वैज्ञानिक दृष्टिकोण' विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए बरेली से आए वरिष्ठ साहित्यकार आचार्य देवेंद्र देव ने कहा कि विज्ञान के इस युग में हम आज भी रूढ़िवादी विचारों को ढो रहे हैं।

गाँव में भूत व चुड़ैल के नाम पर लोग आज भी अंधाधुंध पैसा व अपना समय बरबाद कर रहे हैं। ऐसे में बच्चों के मन में बचपन से ही वैज्ञानिक सोच जाग्रत किए जाने की जरूरत है, ताकि बच्चे क्या, क्यों तथा कैसे के माध्यम से सवाल करना सीखें।

पाठ्यक्रम में इन सबका समावेश करते हुए कक्षा-कक्ष और शिक्षण प्रकिया में लागू किए जाने की आवश्यकता है। इसी के साथ शिक्षकों, अभिभावकों व साहित्यकारों को भी वैज्ञनिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

सत्र की अध्यक्षता करते हुए मुरादाबाद से आए वरिष्ठ साहित्यकार डॉ.राकेश चक्र ने कहा कि बच्चों के लिए लिखते समय हमें बच्चा बनकर बच्चों के मनोविज्ञान को समझते हुए बालसाहित्य लिखना चाहिए। अजमेर से आई वरिष्ठ बाल साहित्यकार डॉ.चेतना उपाध्याय ने कहा कि बालसाहित्य में जहाँ कल्पना जरूरी है, वहीं बच्चों को यथार्थ से जोड़ने वाला साहित्य भी लिखा जाना चाहिए।

इस मौके पर अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में मुख्य अतिथि डॉ. आर.पी.सारस्वत, डॉ.आशुतोष सती, इंदु तिवारी, डॉ.रंजना अग्रवाल, नील उपाध्याय, तूलिका सेठ, डॉ.रमा सिंह, श्वेता मिश्रा, प्रकाशचंद्र पांडे, नीरज पंत, डॉ. दीपा कांडपाल, डॉ.खेमकरण सोमन, अनुज कुमार, कृष्ण कुमार मौर्य, एडवोकेट नकुल शर्मा उग्र, अमित श्रीवास्तव, दाऊ दयाल वर्मा, अभीककुमार डे, दुर्गेश्वर राय आदि ने अपनी बाल कविताओं का वाचन किया। ■■■

कांग्रेस नेता गणेश गोदियाल ने राज्य सरकार पर लगाए भ्रष्टाचार के आरोप

रीजनल रिपोर्टर ब्यूरो

बदरी-केदार समिति के पूर्व अध्यक्ष एवं कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष गणेश गोदियाल ने राज्य सरकार द्वारा त्रिस्तरीय पंचायती चुनावों को लेकर जारी आरक्षण सूची को भ्रामक एवं जनता के साथ जालसाझी बताया है।

पौड़ी में आयोजित प्रेस वार्ता में पूर्व विधायक गणेश गोदियाल ने कहा कि त्रिस्तरीय पंचायती चुनाव के आरक्षण की प्रक्रिया में अनंतिम सूची (अंतिम लेकिन स्थाई नहीं) जारी करने के बाद आम जनता को आपत्ति दर्ज करने के लिए एक निश्चित समयांतराल मिलता है, लेकिन यहां एक दिन बाद ही अंतिम सूची जारी कर दी गई। इस तरह 24 घंटे के भीतर अंतिम सूची जारी कर आपत्ति जारी करने का समय ही नहीं दिया गया।

उन्होंने राज्य सरकार पर आरोप लगाया कि शासन ने जिला प्रशासन को यह बदमाशी करने का आदेश दिया है। यानी इस गडबड झाले तथा भ्रामकता के लिए सिर्फ जिला प्रशासन ही नहीं राज्य सरकार भी दोषी है।

गौरतलब है कि इससे दो दिन पूर्व श्रीनगर गढ़वाल में प्रेस वार्ता कर गणेश गोदियाल ने राज्य सरकार पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाए और कहा-

- मंत्री गणेश जोशी पर आय से अधिक संपति का आरोप है। देहरादून में आयोजित कृषि मेला (जो बाद में भ्रष्टाचार के आरोप के बाद स्थगित कर दिया गया,) के आयोजन में टेंडर समय सीमा से पहले ही कर दिया गया। न्यायालय द्वारा इस मामले में कैबिनेट को हलफनामा भी दिया गया। कैबिनेट को मुकदमा चलाने की मंजूरी देनी चाहिए थी लेकिन कैबिनेट ने अनुमति नहीं दी इससे समझा जा सकता है कि भ्रष्टाचार और भ्रष्टाचारियों को राज्य सरकार किस कदर प्रश्रय दे रही है।
- डॉ.धन सिंह रावत पर भ्रष्टाचार का आरोप लगा है। यहां तक कि विधायकों ने लिखित रूप से शिकायतें भी दी हैं, परंतु सरकार ने कोई भी कार्यवाही नहीं की। ■■■

2025-26 REGISTRATION NOW OPEN FOR GRADE 11

The best school in the town with professional service

ABOUT US

The school comes with an uncompromising commitment. It aims to achieve specific measurable observable and quantitable results among all aspirants/students because the school has a vision to provide value based education to young minds and provide a dynamic learning environment.

OUR FACILITIES

The School Provide All Basic Facilities Each Student. Indoor And Outdoor Sports Are Provided By School.

- Composite Science Lab
- Physics Lab
- Chemistry Lab
- Biology Lab
- Maths Lab
- Computer Science Lab
- Home Science Lab
- Library
- Other Rooms

Streams offered:

- Humanities
- Commerce
- Science

Grade Nursery to 12th

Visit our facebook page or website for more
https://www.facebook.com/shemfordSrinagar
srinagar-garhwal.shemford.com

Call To find out more
9568450335, 7895938233

Email
srinagar@shemford.com